Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

Original Article

जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना सारंगढ़ ब्लॉक जिला रायगढ़ (छ.ग.)

रेखा राय[1], विजय कुमार वैष्णव[2], डॉ. डी.डी. कश्यप[3]
[1,2] शोधार्थी शा.बिलासा कन्या महाविद्यालय बिलासपुर
[3]शोध निर्देशक शा.बिलासा कन्या महाविद्यालय बिलासपुर
Email- vijaybsp0@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171022
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 10
Pp. 102-104
October. 2025
Submitted: 18 Sept. 2025
Revised: 28 Sept. 2025
Accepted: 13 Oct. 2025
Published: 31 Oct. 2025

संक्षेपिका

जीवकोपार्जन के लिए की जाने वाली आर्थिक क्रियाओं को व्यवसाय कहते हैं। इससे देश की अर्थव्यवस्था तथा आर्थिक विकास के स्तर का ज्ञान होता है । इसके अध्ययन से ज्ञात होता है कि कोई देश कृषि प्रधान, पशुपालन अथवा उद्योग प्रधान है । व्यक्ति की व्यवसायिक स्थिति उसके विचार, सामाजिक दृष्टिकोण, व्यक्तित्व तथा राजनीतिक संबद्धता को स्पष्ट करता है क्योंकि किसी भी प्रमुख वर्ग में अनेक सामाजिक और आर्थिक स्तर के व्यक्ति होते हैं । किसी भी देश की कुल जनसंख्या को दो प्रमुख उप–विभागों में बांटा जाता है। पहले आर्थिक दृष्टि से क्रियाशील जनसंख्या अथवा श्रमशील स्त्री–पुरुषों का वह भाग जो आर्थिक वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में संलग्न है, दूसरा आर्थिक दृष्टि से अकार्यशील जनसंख्या अथवा दूसरे पर निर्भर व्यक्ति जैसे :– बच्चे, सेवा मुक्त वृद्ध, छात्र–छात्राएं, गृहणी, पेंशन तथा किराया भोगी व्यक्ति सम्मिलित हैं ।

आधार शब्द :– *क्रियाशील जनसंख्या, श्रम शक्ति, आयु वर्ग, व्यवसाय, सहभागिता ।*

प्रस्तावना

प्रारंभ से मनुष्य अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कोई ना कोई कार्य करता आया है । व्यवसाय की संकल्पना एक गत्यात्मक विचार है, जो देश काल के अनुसार परिवर्तनशील होता है । व्यावसायिक संरचना के अंतर्गत कुल जनसंख्या में कार्यरत जनसंख्या के विभिन्न व्यवसाय अथवा कार्यों में सलंग्नता का अध्ययन किया जाता है, परिश्रम युक्त व्यवसायिक कार्यों में जुड़े तथा इन्हीं कार्यों से जीवकोपार्जन करने वाली जनसंख्या को आर्थिक रूप से सक्रिय जनसंख्या कहा जाता है । किसी निश्चित आर्थिक कार्य के अंतर्गत सक्रिय जनसंख्या के अनुपालिक वितरण को जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना कहते हैं आर्थिक क्रियाओं के आधार पर अनेक प्रकार के व्यवसायिक वर्ग होते हैं जैसे :– कृषि, वानिकी, आखेट, मत्स्यपालन, पशुपालन, खनन, विनिर्माण, उद्योग, निर्माण कार्य, बिजली, गैस, जल, एवं स्वास्थ्य सेवाएं, वाणिज्य, परिवहन, भंडारण एवं संचार सेवाएं तथा अनेक अवर्गीकृत व्यवसाय शामिल है । यह वर्गीकरण अंतर्राष्ट्रीय तुलना के लिए होता है, लेकिन प्रत्येक देश अपनी जनसंख्या को अपनी आवश्यकता अनुसार अलग–अलग व्यवसायिक वर्गों में वर्गीकृत करता है ।

साहित्यावलोकन

पूर्व साहित्य की समीक्षा करें तो बहुत सारे शोधकर्ताओं ने विभिन्न व्यावसायिक संरचनाओं पर शोध कार्य किया हैं। इन्होंने अनेक क्षेत्रों में शोध किया हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि किसी भी क्षेत्र या देश का विकास वहां के आर्थिक व्यवसायिक दशा पर निर्भर करती है ।

पंडा बी.पी. (1988) :– इन्होंने 1971 के श्रमिक की अंतर्राष्ट्रीय परिभाषा को अपनाते हुए क्रियाशील जनसंख्या का वर्गीकरण किया है । इन्होंने 1971 और 1981 जनगणना के आंकड़े के आधार पर तुलनात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया है, इस प्रकार 1981 में कुल क्रियाशील जनसंख्या में कोई महत्वपूर्ण वृद्धि नहीं हुई ।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
रेखा राय, शोधार्थी शा.बिलासा कन्या महाविद्यालय बिलासपुर

How to cite this article:
राय, . रेखा ., वैष्णव, . विजय . कुमार ., & कश्यप, . डी . डी . (2025). जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना सारंगढ़ ब्लॉक जिला रायगढ़ (छ.ग.). Journal of Research and Development, 17(10), 102–104. https://doi.org/10.5281/zenodo.17622009

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17622009
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

टोन्डे आशालता (2012) :– टोन्डे ने स्पष्ट किया कि, किसी भी देश या क्षेत्र का विकास वहां की आर्थिक व्यवसायिक दशा पर निर्भर करती है । जहां पर आर्थिक एवं व्यापार के साधन अधिक होते हैं, वह क्षेत्र या गांव विकसित गांव या क्षेत्र कहलाता है । इसके अध्ययन से पता चलता है कि देश कृषि प्रधान, पशुपालन या उद्योग प्रधान है। व्यक्ति की व्यावसायिक स्थिति उनके विचार, सामाजिक दृष्टिकोण, व्यक्तित्व तथा राजनीतिक संबंध को भी देश या गांव में आय स्रोत के रूप में मुख्यतः कृषि मजदूरी व अन्य साधन अपनाये जाते हैं । जिससे गांव व देश के व्यक्ति अपना भरण पोषण करते हैं ।

राकेश रुकमनी (2014) :– राकेश जी ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया है कि, मानव द्वारा अपने जीवकोपार्जन के लिए किये जाने वाले अपने कार्य उनका पेशा है। किसी भी क्षेत्र की आर्थिक संरचना का आकलन वहां की संपूर्ण जनसंख्या के कार्य करने वाले व्यक्तियों से करते हैं। क्योंकि जिन क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों का प्रतिशत अधिक होगा उन क्षेत्रों की आर्थिक संरचना भी सुदृढ़ होगी।

वर्मा एल.एन.(2017) :– इन्होंने अपने शोध कार्य के दौरान छत्तीसगढ़ राज्य के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि माना है। जिसमें प्रदेश की 80% जनसंख्या संलग्न है, यहां की कृषि जीवन निर्वाहक है, यहां 90% से अधिक कृषि भूमि पर खाद्यान्न फसले उगाई जाती है जिसमें धान फसल प्रमुख है ।

अध्ययन क्षेत्रः–

रायगढ़ जिला छत्तीसगढ़ का एक पूर्वी जिला है । सारंगढ़ विकासखंड के उत्तर में नवागढ़ विकासखंड और पश्चिम में मस्तूरी उत्तर पश्चिम में पामगढ़ तथा दक्षिण में महासमुंद जिला तथा पूर्व में बरमकेला विकासखंड से घिरा हुआ है ।

स्थिति एवं विस्तार :–

21^0.63′ उत्तरी अक्षांश से 83^0.13′ पूर्वी देशांतर के बीच है। सारंगढ़ विकासखंड की कुल क्षेत्रफल 533.26 वर्ग किलोमीटर है । यहां की कुल जनसंख्या 1,67,200 है इसमें 8,29,421.63 और अक्षांश से 21^0.63′ जी दिशा के बीच है । सारंगढ़ विकासखंड की कुल क्षेत्रफल 533.26 वर्ग किलोमीटर है । यहां की कुल जनसंख्या 1,672,00 है इसमें 82,948 पुरुष एवं स्त्रियां 84,252 है। कुल परिवारों की संख्या 3311 है । सारंगढ़ की लगभग संपूर्ण जनसंख्या ग्रामीण एवं नगरी दोनों हैं और अनुसूचित जाति 13.11% एवं अनुसूचित जनजाति 6.4% है, सारंगढ़ विकासखंड का अधिकांश भाग मैदानी समतल है, इसलिए यहां की अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है । अल्प जनसंख्या ही कृषि के अतिरिक्त खनन उद्योग व्यापार वाणिज्य आदि क्रिया में सम्मिलित है । यहां के अधिकांश कृषकों के जोत का आकार छोटा है और अधिकांश कृषक सिंचाई के लिए मानसून पर निर्भर हैं। यहां की कृषि जीवन निर्वाहक प्रकार की है, बहुत ही कम लोग व्यापारिक उद्देश्य से कृषि कार्य करते हैं, कृषि के अतिरिक्त विनिर्माण, उद्योग, वाणिज्य, व्यापार और प्रशासनिक कार्यों में भी जनसंख्या संलग्न है। व्यावसायिक संरचना के अनुसार

कृषक की संख्या 217, खेतिहर मजदूर 146, पारिवारिक उद्योग 442, सीमन्तक 529 एवं अन्य कार्य 3711 तथा कार्यशील की संख्या 9859 व्यक्ति है ।

अध्ययन का उद्देश्यः–

1.अध्ययन क्षेत्र में व्यवसायिक संरचना का अध्ययन करना।
2.अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न व्यावसायिक वर्गों का अध्ययन करना।
3.अध्ययन क्षेत्र की आर्थिक विकास के स्तर का अध्ययन करना।
4.अध्ययन क्षेत्र के व्यवसायिक संरचना में स्त्री पुरुष दर का अध्ययन करना।
5.अध्ययन क्षेत्र के व्यवसायिक वर्गों की बहुलता का पता लगाना।
क्षेत्र के व्यवसाय संबंधी समस्याओं की समाधान तथा विकासात्मक दिशा प्रदान करने हेतु उपयुक्त नियोजन प्रणाली का प्रस्तुतीकरण।

शोध प्रविधिः–

प्रस्तुत अध्ययन में मुख्यतः 2011 की जनगणना से प्राप्त द्वितीय आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। रायगढ़ जिले के सारंगढ़ ब्लॉक में व्यवसायिक संरचना से संबंधित महत्वपूर्ण सूचनाएं विभिन्न जनगणनाओं से लिया गया है । व्यवसाय संबंधी विभिन्न आंकड़ों का संकलन कार्यालय एवं जिला कलेक्टर, जनपद पंचायत, जिला सांख्यिकीय अधिकारी व अशासकीय, अर्धशासकीय, कार्यालयों, विभिन्न शोध पत्रिकाओं से किया गया है । तथा आंकड़ों का वर्गीकरण सारणीय विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों का उपयोग कर निष्कर्ष प्राप्त किया गया है । जिससे अध्ययन की सार्थकता बनी रहे।

परिकल्पनाः–

1. व्यवसायिक संरचना के अध्ययन से व्यवसाय से संबंधित आर्थिक नीतियों का मूल्यांकन संभव हो जाएगा।
2. व्यवसायिक संरचना के अध्ययन से व्यवसाय निर्धारण में सहायता मिलेगी।
3. क्षेत्र के आर्थिक विकास स्तर का मूल्यांकन संभव होगा।

जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना :–

श्रम शक्ति अनेक व्यवसायों में बटी होती है अतः व्यवसायिक संरचना श्रम शक्ति के स्वरुप को स्पष्ट करती है । किसी भी प्रदेश की व्यवसायिक संरचना को प्रभावित करने वाले अनेक कारक होते हैं । किसी भी प्रदेश की व्यवसायिक संरचना को प्रभावित करने वाले कारकों में भौतिक संसाधनों की विविधता जैसे उत्तम कृषि भूमि, कटा–फटा समुद्री तल, वनों का आर्थिक व

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

सुगमता अथवा खनिज संपन्न भूगर्भिक संरचनाएं तदनुरूप व्यवसायों को जन्म देतें हैं । औद्योगीकरण न केवल इन संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग करता हैं, अतिरिक्त रोजगार के नए–नए क्षेत्र प्रदान करता है । कार्यशील जनसंख्या (अर्थात 15 से 59 वर्ष आयु वर्ग के स्त्री और पुरुष) कृषि वानिकी, मत्स्य, विनिर्माण, निर्माण, व्यवसायिक परिवहन सेवाओं, संचार तथा अन्य अवर्गीकृत सेवाओं में संलग्न है।

रायगढ़ जिले का सारंगढ़ विकासखंड मैदानी भाग है। यहां की अधिकांश जनसंख्या कृषि के साथ अन्य व्यवसायों में संलग्न है, यहां कृषि अधिक उन्नत है अर्थात नहरों द्वारा सिंचाई की जाती है।

श्रम शक्ति का वर्गीकरण :– समस्त श्रम शक्ति को तीन प्रमुख वर्गों में बांटा जाता है ।

1.प्राथमिक उद्योग :– इसके अंतर्गत उन उद्योग को सम्मिलित किया जाता है, जैसेः– कृषि, पशुपालन, लकड़ी काटना, वनोपज संग्रहण करना, मत्स्य पालन आदि सारंगढ़ में बहुत कम जनसंख्या प्राथमिक व्यवसाय में है।

2.द्वितीयक उद्योग :– इसके अंतर्गत कुटीर उद्योग, विनिर्माण उद्योग तथा गृह निर्माण कार्य एवं उनमें संलग्न श्रमिकों को सम्मिलित किया जाता है । बिजली, गैस, जलापूर्ति, मशीनों का मरम्मत तथा रखरखाव मे लगे लोग भी इसी के अंतर्गत वर्गीकृत है ।

3.तृतीयक उद्योग :– वाणिज्य व व्यापार परिवहन, संचार भंडारण, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाएं, बैंकिंग, बीमा तथा शासकीय व अशासकीय सेवाएं इस वर्ग के अंतर्गत आते हैं। तालिका क्रमांक 1

सारंगढ़ विकासखंड : व्यावसायिक संरचना (2011)

स.क्र.		मुख्य क्रियाशील जनसँख्या	पुरुष	स्त्री
1.	कृषक	217	194	23
2.	खेतिहर मजदूर	146	75	71
3.	पारिवारिक उद्योग	442	273	169
4.	अन्य कार्य	3711	3092	619
5.	सीमन्तक कार्य	579	353	226
6.	अकार्यशील	9859	3433	6426
कुल	14954	7360	7534	

स्त्रोत – जनगणना पुस्तिका (2011)

रायगढ़ जिले के सारंगढ़ विकासखंड के अधिकांश जनसंख्या द्वितीयक और तृतीयक क्रियाकलापों में संलग्न है । बहुत ही कम जनसंख्या प्राथमिक व्यवसायों में कार्यरत है।

निष्कर्ष एवं सुझाव :–

व्यवसाय की संकल्पना एक गत्यात्मक विचार है। जो देश काल के अनुसार परिवर्तनशील होता है। रायगढ़ जिले के सारंगढ़ विकासखंड के अधिकांश क्रियाशील जनसंख्या प्राथमिक द्वितीयक एवं तृतीयक व्यवसाय में संलग्न है । यहां की कृषि उन्नत कृषि है, जिसके कारण यहां जनसंख्या सघन बसा हुआ है, यहां कृषि के अतिरिक्त मजदूरी, खनन, वाणिज्य, व्यापार, परिवहन, बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं में क्रियाशील जनसंख्या संलग्न है । यहां की कृषि उन्नत कृषि है, यहां सिंचाई नहरों द्वारा की जाती है ।

अतः कृषि के साथ–साथ अन्य व्यवसायों को विकसित किया जा सकता है और कच्चे माल के रूप में कृषि उत्पादन का उपयोग उद्योगों में किया जा सकता है। जिससे क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और लोगों की आर्थिक सुदृढ़ता मजबूत होगी ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. कुमार वी शिवनारायण गुप्त (2018): "जनांकिकीय" एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस आगरा ।
2. खांडेकर ऊष्मा (2018) : छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों की जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना ।
3. टोन्डे आशालता (2012) : मुंगेली जिले के ग्राम हाथीनाला का जनांकिकीय विशेषताएं के सन्दर्भ में विशेष अध्ययन।
4. दीपिका (2017): "जनजातीय भूगोल" राहुल पब्लिशिंग हॉउस, मेरठ (उ.प्र.)।
5. पंडा वी.पी. (1988) : "जनसँख्या भूगोल" मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।
6. मौर्य एस.डी. (2015) : "जनसँख्या भूगोल" शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद (उ.प्र.)।
7. यादव अरुण कुमार (2012): "जनसँख्या भूगोल" विश्वभारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली ।
8. राकेश रूखमणी (2014): बिलासपुर जिले में अनुसूचित जति एवं अनुसूचित जनजाति की जनसँख्या संरचना एक भौगोलिक अध्ययन ।
9. वर्मा एल.एन. (2017): "छत्तीसगढ़ का भूगोल" छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ अकादमी, रायपुर (छ.ग.)।
10. सिन्हा वी.सी. (2018): "व्यावसायिक पर्यावरण" एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हॉउस, आगरा (उ.प्र.)।
11. हुसैन मजीद (2018) : कृषि भूगोल रावत पब्लिशिंग, जयपुर ।
12. हरदेवी माधव (2017): छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था और आर्थिक भूगोल त्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रन्थ अकादमी, रायपुर (छ.ग.)।